74

जनवरी-जून, 2018

मध्य भारती

मानविकी एवं समाजविज्ञान की द्विभाषी शोध-पत्रिका

सम्पादकीय परामर्श मण्डल

- प्रो. वीरेन्द्र मोहन, हिन्दी विभाग
- प्रो. ए.एन. शर्मा, मानवशास्त्र विभाग
- प्रो. पी.पी. सिंह, विधि विभाग
- प्रो. ब्रजेश कुमार श्रीवास्तव, इतिहास विभाग
- डॉ. अनुपमा कौशिक, राजनीतिशास्त्र विभाग

मध्य भारती

मानविकी एवं समाजविज्ञान की द्विभाषी शोध-पत्रिव

अंक-74, जनवरी-जून 201

ISSN 0974-0066 (पूर्व-समीक्षित अर्द्धवार्षिक शोध-पत्रिक
डॉक्टर हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय, सागर (म.प्र

यू.जी.सी. द्वारा मान्य पत्रिकाओं की सूची (प.सं.-48918) में सम्मिलित

प्रकाशित रचनाओं के अभिमत से डॉक्टर हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय, सा
या सम्पादकों की सहमति अनिवार्य नहीं है

सम्पादकीय पत्र व्यवहार

मध्य भारत
डॉक्टर हरीसिंह गौर विश्वविद्याल
सागर - 470003 (म.प्र

दूरभाष : (07582) 26445
ई-मेल : madhyabharti.2016@gmail.cor

आवरण : डॉ. छबिल कुमार मेहे

मुद्रण

अमन प्रकाश
कटरा नमक मंडी, सागर (म.प्र.

सदस्यता शुल्क		
	प्रति अंक	आजीवन
व्यक्तिगत	रु. 150/-	रु. 2000/-
संस्थागत	रु. 200/-	रु. 4000/-

एशियाई परिदृश्य और भारत-चीन संबंध

नेहा निरंजन

पिछले कुछ दिनों में भारत चीन संबधों में हुए नाटकीय बदलाव ने समस्त विश्व का ध्यान आकृष्ट किया है। विश्व के समस्त राष्ट्रों के लिए यह उत्सुक्ता थी कि एशिया की दोनों उभरती शक्तियों के मध्य का तनाव क्या रुप लेगा क्योंकि अब विश्व राजनीति के समीकरण भारत-चीन संबंधों से प्रभावित हुए बिना संभव नहीं है। प्रस्तुत शोध पत्र में भारत-चीन संबंधों में आये तनाव के कारणों को जानने और एशिया में दोनों राष्ट्रों की रणनीतिक सक्रियता को समझने का प्रयास किया गया है।

मुख्य बिन्दु -

पंचशील, सीपीईसी, डोकलाम, वन वेल्ट एण्ड वन रोड, न्यूक्लियर सप्लायर्स ग्रुप भारत चीन संबंधों का महत्व दोनों देशों के हितों के लिए ही नहीं अपितु तृतीय विश्व के विकासशील देशों के हितों के लिए भी आवश्यक है। बदलते एशियाई परिदृश्य में आज पूरे विश्व की नजर एशिया की दो महत्वपूर्ण और उभरती हुई शक्तियों, भारत और चीन पर है। शीत युद्धोत्तर काल में अंतर्राष्ट्रीय परिदृश्य तेजी से बदला है। आज का युग परस्पर निर्भरता और आर्थिक सहयोग का युग है। ऐसे में एशिया के दोनों शक्ति सम्पन्न राष्ट्रों की गतिविधियों पर विश्व के समस्त राष्ट्रों (यूरोप, अमेरिका सहित) की दृष्टि लगी हुई है।

चीन एक ऐसा राष्ट्र है जिसने बंदूक की गोली की ताकत से साम्यवादी शासन की स्थापना की और अपनी आक्रामक नीति से विश्व व्यवस्था को हमेशा आतंकित रखा कि कहीं ड्रैगन की 'तंद्रा' भंग न हो जाए। वहीं भारत लंबे उपनिवेशवाद को झेलकर अहिंसात्मक आंदोलन के माध्यम से स्वतंत्रता प्राप्त राष्ट्र बना। चीन जहाँ एकात्मक केन्द्रीकरण पर बल देता है वहीं भारत में लोकतांत्रिक विकेन्द्रीकरण को अपनाया गया है। इन विभिन्नताओं के बावजूद 1949 में स्थापना के बाद चीनी गणराज्य को मान्यता देने वाला प्रथम गैर-साम्यवादी राष्ट्र भारत ही था। 1954 में पंचशील के माध्यम से प्रारंभिक स्नेहपूर्ण संबंधों की शुरूआत के बाद दोनों राष्ट्रों के राजनयिक संबंध कई उतार-चढ़ाव से गुजरे। 29 अप्रैल 1954 को दोनों राष्ट्रों के बीच सौहार्द्रपूर्ण माहौल में पंचशील को स्वीकार किया गया। पंचशील में (1) एक दूसरे की अखण्डता और संप्रभुता का सम्मान (2) परस्पर अनाक्रमण (3) एक दूसरे के आंतरिक मामलों में हस्तक्षेप न करना (4) समान और परस्पर लाभकारी संबंध एवं (5) शांतिपूर्ण सहअस्तित्व, शामिल किए गए लेकिन जल्द ही यह सौहार्द्रपूर्णता युद्ध की कटुता में परिवर्तित हो गई। 1962 के युद्ध के बाद ये कयास लगाए जा रहे थे कि अब दोनों राष्ट्रों के संबंध कभी पहले की भांति सहयोगपूर्ण नहीं होंगे लेकिन दोनों पड़ोसी राष्ट्रों ने एक दूसरे की महत्ता को समझते हुए जल्द ही

मध्य भारती-74, जनवरी-जून, 2018, ISSN 0974-0066, *pp. 128-134*